

ई0 वी0 रामासामी पेरियार: दर्शन चिन्तन और सच्ची रामायण

डॉ.अनुराधा

सहायक प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)

कमला आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज, मिर्जापुर

Date of Submission: 15-09-2026

Date of Acceptance: 27-09-2026

(सजिल्द)

लेखक के बारे में— वी0 गीता नारीवादी, इतिहासविद, लेखक और अनुवादक है। ये कई वर्षों से महिला आंदोलन में रही हैं। ये जाति, शिक्षा, नारीवाद और समकालीन तमिल समाज पर अंग्रेजी और तमिल में लेखन करती रही हैं। इन्होंने एस0वी0 राजादुरै के साथ मिलकर 'टुवर्ल्स' अ नॉन-ब्राह्मण मिलीनियम: फ्रॉम अयोथी थास टू पेरियार' शीर्षक किताब लिखी है द्रविड आंदोलन और राजनीति पर इनके लेख 'इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली' प्रकाशित होते रहते हैं।

पुस्तक के बारे में— इस पुस्तक में मेरी रुचि का कारण पेरियार के जाति व्यवस्था और धर्म की आलोचना सम्बन्धी विचार है। प्रस्तुत पुस्तक 'ई0 वी0 रामासामी पेरियार: दर्शन चिन्तन और सच्ची रामायण' में पेरियार के जाति-धर्म की आलोचना सम्बन्धी विचार और नारीवाद के समर्थन पर उनके विचारों का उल्लेख किया गया है। पेरियार के विपुल लेखन का बहुत छोटा अंश हिंदी में अनुदित हुआ है। पेरियार के इस पुस्तक में ऐसे चुनिंदा लेख संग्रहित हैं, जिनसे हिन्दी पाठक इस दक्षिण भारतीय दार्शनिक—चिन्तक से परिचित हो सकेंगे। इस पुस्तक में दो खण्ड हैं, पहले खण्ड में पेरियार के जाति-धर्म की आलोचना सम्बन्धी विचारों का विस्तृत वर्णन किया गया है तथा उनके जाति-धर्म को समाज के लिये बुराई और ऊँच-नीच को बढ़ावा देने सम्बन्धी विचारों का उल्लेख बहुत स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से किया गया है। खण्ड एक में बहुत सारे शीर्षकों का उल्लेख है जैसे 'भविष्य की दुनिया— इस शीर्षक में पेरियार मानव जाति के लिये कैसी दुनिया की कल्पना करते हैं, विस्तृत रूपरेखा दी गई है। इसके अलावा खण्ड एक में पेरियार के 'सुनहरे बोल' भी हैं, जिनके माध्यम से उनके प्रतिनिधि विचारों से पाठक का पूरी तरह से परिचय हो जायेगा। पेरियार के ब्राह्मणवादी धर्म-ग्रंथों की विस्तृत व्याख्या की है, इन धर्म-ग्रंथों में क्या है इसके बारे में भी प्रस्तुत पुस्तक में उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक के दूसरे खण्ड में 'सच्ची रामायण' पेरियार की बहुचर्चित एवं सबसे विवादास्पद कृति का उल्लेख किया गया है। पेरियार की नजर में रामायण एक धार्मिक ग्रंथ नहीं बल्कि एक राजनीतिक ग्रंथ है। पेरियार ने रामायण को कपोल कल्पना माना है। जिसकी रचना का मूल उद्देश्य अनार्यों पर आर्यो, बहुजनों पर द्विजों और महिलाओं पर पुरुष के वर्चस्व की सच्ची रामायण का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही पुस्तक के अन्त में सच्ची रामायण के बारे में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसलों को भी किताब के परिशिष्ट में जगह दी गई है।

विषय सूची:—

खण्ड —1

भविष्य की दुनिया सुनहरे

बोल

बुद्धिवाद: पाखण्ड व अंध विश्वास से मुक्ति का मार्ग

ब्राह्मणवादी धर्म ग्रंथों में क्या है? दर्शन—शास्त्र क्या

है? जाति का उन्मूलन महिलाओं के अधिकार

पति-पत्नी नहीं, बने एक दूसरे के साथी

खण्ड-2

सच्ची रामायण परिशिष्ट

सच्ची रामायण पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला

खण्ड – 1

भविष्य की दुनिया— प्रस्तुत पुस्तक में भविष्य की दुनिया शीर्षक में उल्लेख किया गया है कि दुनिया कैसी थी? आज की दुनिया कैसी है? आने वाले कल की दुनिया कैसी होगी? समय के साथ-साथ कौन-कौन से परिवर्तन होंगे? केवल तर्कवादी इन बातों को सही-सही समझ सकता है। धर्माचार्यों के लिये इन्हें समझना अत्यन्त कठिन है। धर्माचार्य मात्र उतना जानते हैं, जितना उन्होंने धर्मशास्त्रों और ऊट पटांग पौराणिक साहित्य को रटटा लगाते हुए समझा है। उन सब चीजों से जाना है जो ज्ञान और तर्क की कसौटी पर कहीं नहीं ठहरते। ये दिमाग के बजाय दिल से सोचते हैं जबकि बुद्धिवादियों का यह तरीका नहीं, वे ज्ञानार्जन को महत्व देते हैं, अनुभवों से काम लेते हैं। उन सब वस्तुओं से सीखते हैं जो उनकी नजर से गुजर चुकी है।

सुनहरे बोल— 'सुनहरे बोल' शीर्षक में पेरियार के विचारों का चयनित संकलन प्रस्तुत किया गया है ताकि लोग यह जान सकें कि पेरियार धर्म-राजनीति आदि के बारे में क्या सोचते थे? उनके कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं— जो ईश्वर और धर्म में विश्वास रखता है, वह आजादी हासिल करने की कभी उम्मीद नहीं कर सकता। धर्म का आधार अंधविश्वास है। ब्राह्मणों ने शास्त्रों और पुराणों की सहायता से शुद्रों(वैश्य या रखैल पुत्र) को बनाया है। मनुष्य-मनुष्य बराबर है, इसलिये कोई शोषण नहीं होना चाहिए। ज्ञान का आधार सोच है, सोच का आधार तर्कवाद है।

बुद्धिवाद : पाखण्ड व अंधविश्वास से मुक्ति का मार्ग— इसमें बताया गया है कि मनुष्य को इस दुनिया में अन्य प्राणियों से बेहतर माना जाता है क्योंकि उसने ज्ञान का उपयोग करते हुए काफी उन्नति की है। लेकिन हमारे देशवासियों की स्थिति इस ज्ञान का उपयोग न करने के कारण बेहद खराब हो रही है। ईश्वर, संतो, ऋषियों और अवतारों की बात को समझना मनुष्य की अपनी बुद्धि से परे है। जो भी विवेक और आत्म सम्मान के अनुरूप नहीं है, उसे छोड़ दिया जाना चाहिए। अगर अंधविश्वास हटा दिया जाये और धर्म को विवेक के प्रकाश में देखा जाये तो कोई धर्म जीवित नहीं रहेगा।

ब्राह्मणवादी धर्म ग्रंथों में क्या है?— इस शीर्षक के अन्तर्गत बताया गया है कि अज्ञानता का साहित्य है— ब्राह्मणवादियों का साहित्य। रामायण को एक ईश्वर की कहानी के रूप में रचा गया है। रामायण भी मनु की संहिता की तरह ही है। राम की पैदाइश राक्षसों को मारने के लिये हुई। ऐसा माना जाता है कि महाविष्णु ने राम के रूप में अवतार लिया। इस शीर्षक में राम की पैदाइश एक बेहुदी बात कही गयी है। इस महाकाव्य में अनुशासन हीनता, वैश्यावृत्ति और आत्मसम्मान रहित दर्शन शास्त्र क्या है— इसमें अग्रणी दर्शन सिद्धांतों पर चर्चा की गई है। इसमें बताया गया कि दार्शनिक बोध और दार्शनिक

अभिव्यक्ति सत्य होती है। उसकी पुनर्व्याख्या में उसे आगे तक पहुँचाने के लिये उपेक्षा की जाती है कि चीज उसी रूप में देखी जाये, जैसे कि वे हैं। और ठीक वैसे ही समझी जाये जैसा उनसे प्रत्याशित है। मौटे तौर पर कह सकते हैं। कि ज्ञान प्रकृति से, हमारे सहजानुभवों से प्राप्त होता है। इसमें बताया गया है कि ईश्वर धर्म और आत्मा की खोज और उनके अस्तित्व को वास्तविक मानने वाले लागे स्वार्थी और शोषक लागे हैं।

जाति का उन्मूलन— इसमें उल्लेख किया गया है जो जाति व्यवस्था जन्म के आधार पर ऊँच—नीच की शिक्षा देती है, उसे हर आधार पर नष्ट कर देना चाहिये। एक बड़ी आबादी आज अछूतों के रूप में बनी हुई है और इससे भी बड़ी आबादी भूदासों, कुलियों, घरेलू, नौकरो व गैरकानूनी बच्चों के रूप में शुद्रों के नाम पर मौजूद है। ऐसी आजादी किस काम की, जो इन भेदभावों को खत्म नहीं कर सकती है। ऐसा धर्म, धर्म शास्त्र और ईश्वर किसे चाहिये जो परिवर्तन नहीं कर सकता। महिलाओं के अधिकार— इसमें महिलाओं की निम्न दशा का वर्णन किया गया है। पुरुष स्त्री को अपनी सम्पत्ति मानता है और यही नहीं मानता कि पुरुष के ही समान स्त्री की भी भावनाये हो सकती है। महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने से क्यों रोका जाता है। महिला की दास्ता केवल पुरुषों के कारण है। पुरुषों के लिये एक महिला केवल उसकी रसोइया, उसके घर की नौकरानी, उसके परिवार का वंश आगे बढ़ाने वाली साधन है। महिला को भी अपनी पसंद से किसी को चुनने का अधिकार होना चाहिए और सम्पत्ति में भी महिला को पुरुष के बराबर अधिकार मिलना चाहिये। पति पत्नी नहीं, बने एक दूसरे के साथी— विवाहित दम्पतियों को एक—दूसरे के साथ मैत्री—भाव से व्यवहार करना चाहिये। किसी भी मामले में पुरुषों को अपने पति होने का घमण्ड नहीं होना चाहिये। पत्नी को भी इस सोच के साथ व्यवहार करना चाहिये कि वह अपने पति की दासी नहीं है न ही रसोइया है। पेरियार विवाह या शादी जैसे शब्दों से सहमत नहीं थे व इसे केवल जीवन में साहचर्य के लिये समझौता मानते थे। उनका कहना था कि विवाह के पारंपरिक रीति—रिवाजों का पालन करने के जरूरत नहीं है। विवाह को केवल लैंगिक समानता व स्त्री पुरुष के बीच समान व्यवहार के सिद्धांत पर अनुबधित किया जाना चाहिये।

खण्ड—2

सच्ची रामायण— सच्ची रामायण पेरियार की एक चर्चित कृति है पेरियार रामायण को धार्मिक किताब न मानकर राजनीतिक पुस्तक मानते हैं। रामायण की मूल अन्तर्वस्तु को उजागर करने के लिये पेरियार ने 'वाल्मीकि रामायण' के ब्राह्मणों द्वारा किये अनुवादों सहित, अन्य रामकथाओं, जैसे 'कम्ब रामायण', 'तुलसीदास की रामायण', 'बौद्ध रामायण', 'जैन रामायण' आदि के अनुवादों तथा उनसे सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन किया था। पेरियार की तमिल भाषा में लिखी पुस्तक 'रामायण पादीरंगल' में अपने अध्ययनों को निचोड़ प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक में तमिल भाषा में प्रकाशित हुई। इसका अंग्रेजी अनुवाद द्रविड कडगम पब्लिकेशन ने 'द रामायण: अ ट्रू रीडिंग' नाम से 1959 में प्रकाशित किया। फिर इसका हिंदी अनुवाद 1968 में 'सच्ची रामायण' नाम से ललई सिंह यादव और राम आधार द्वारा किया गया। सच्ची रामायण में रामायण को ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित नहीं माना गया है, यह एक कल्पना पर आधारित पुस्तक बताई गयी है। यह एक पवित्र पुस्तक नहीं है और राम और सीता के चरित्र भी घृणित हैं। रावण एक आदर्श चरित्र का व्यक्ति वर्णित किया गया है। राम उत्तर भारतीय थे, सीता भी उत्तर भारतीय चरित्र की थी और रावण दक्षिण यानी तमिलनाडू के राजा थे। जिनकी हत्या राम द्वारा की गयी थी। इसमें राम को पाखण्डी, धूर्त, धोखेबाज, निर्दयी, पुरुषहीन तथा लोगों को छिपकर माने वाला बताया गया है और राम को सीता के चरित्र पर संदेह करने वाला भी दर्शाया गया है। सीता और रावण के अनैतिक सम्बन्धों का वर्णन भी इसमें किया गया है। परिशिष्ट:—

सच्ची रामायण पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला— इस पुस्तक के अंत में सच्ची रामायण पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का भी उल्लेख किया गया है। दिसम्बर 1969 को उत्तर प्रदेश सरकार ने ई0वी0 रामासामी 'पेरियार' की अंग्रेजी पुस्तक 'रामायण' को जब्त कर लिया था तथा इसके प्रकाशन पर मुकदमा कर दिया था (हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को आहत करने के आरोप में) लेकिन ललई सिंह यादव ने

जब्तो के आदेश को इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दी और वे मुकदमा जीत गये। फिर सरकार ने हाईकोर्ट के निर्णय के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले पर 16 दिसम्बर 1976 को सर्वसम्मति से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का हवाला देते हुए राज्य सरकार की अपील को खारिज कर दिया।

मूल्यांकन— प्रस्तुत पुस्तक के पहले खण्ड में पेरियार के जो चुनिंदा लेखों, विचारों का उल्लेख किया गया है वह इस पुस्तक में पेरियार के मुख्य रूप से नास्तिक और हिन्दी विरोधी के रूप में दर्शाते हैं। यह गलत तो नहीं है, लेकिन उनका एकांगी चित्रण अवश्य है। उन्होंने धर्म के आधार पर होने वाले शोषण की बहुत आलाचना की, लेकिन उसे तार्किक परिणति तक भी पहुंचाया। इस पुस्तक के लेख पाठकों को न केवल पेरियार के नजरिये से बखूबी परिचित कराते हैं बल्कि इसकी भी झलक प्रस्तुत करते हैं कि पेरियार जाति एवं पितृसत्ता के विनाश के बाद किस तरह के सामाजिक सम्बंधों की कल्पना करते थे। इन लेखों को पढ़ते हुये स्त्री-पुरुष के बीच कैसे रिश्ते होने चाहिये, उसकी एक पूरी तस्वीर सामने आ जाती है पेरियार जाति व्यवस्था के विनाश को आधुनिक भारत के निर्माण के लिये अनिवार्य मानते थे। इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में प्रस्तुत जातिवाद का घोर विरोध और नारीवाद को बढ़ावा देने सम्बंधी विचारों ने मुझे काफी प्रभावित किया हैं। लेकिन पुस्तक के दूसरे खण्ड में सच्ची रामायण का जो उल्लेख किया गया है वह मुझे काफी आलोचनात्मक लगा। एक तरफ जहाँ रामायण को कपोलकल्पना बताया गया है वहीं दूसरी तरफ राम और सीता को घृणित चरित्र वाले बताया गया है। सीता के चरित्र को संदेह की दृष्टि से देखा गया है। अगर रामायण एक कल्पना मात्र है, उसका वास्तविकता से कोई लाने-देना नहीं है तो राम और सीता के चरित्र घृणित क्यों बताये गये हैं। मैं मानती हूँ कि पेरियार किसी भी जाति धर्म को नहीं मानते थे लेकिन किसी भी धर्म का अनादर करना, ईश्वर को अपमान करना और अन्य धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना गलत है। कुल मिलाकर प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम खण्ड में पेरियार के जो विचार दिये गये हैं वह मुझे बहुत प्रभावित करते हैं लेकिन दूसरे खण्ड में सच्ची रामायण में उनके विचार मुझे कुछ आलोचनात्मक लगे

पुस्तक की विशेषताये—

1. इस पुस्तक में मुख्य पृष्ठ अत्यधिक आकर्षक और प्रभावशाली है।
2. पुस्तक लेखन सरल और स्पष्ट है। इस पुस्तक में पेरियार के विचारों का संग्रह काफी प्रभावी है। और स्पष्ट तरीके से दर्शाया गया है।
3. यह पुस्तक थोड़ी हल्की है।
4. इस पुस्तक में लेखक और अनुवादक के बारे में भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है।
5. इस पुस्तक में पेरियार से सम्बंधित कुछ चित्र भी दिये हैं जो पुस्तक पढ़ने में रुचि को ओर बढ़ा देते हैं।

सुझाव:—

वैसे तो यह पुस्तक अपने आप में पूर्ण है, पर मेरे नजरिये से इस पुस्तक में कुछ कमियां हैं जैसे—

1. इस पुस्तक में थोड़ा संक्षिप्त में बताया जाना चाहिये जिससे पाठकों को सरलता से समझ आ सके।
2. पुस्तक में मुख्य पृष्ठ जिल्द थोड़ी कमजोर है इसे थोड़ी माटी होनी चाहिए।
3. पुस्तक में कुछ कठिन शब्दावली का प्रयोग किया गया है जो सरल भाषा में होनी चाहिए। यह पुस्तक हमारी जाति व्यवस्था के उन्मूलन, महिला के समान अधिकार को बढ़ावा देती है। मैं यह पुस्तक उन सभी पाठकों को पढ़ने का निवेदन करूंगी जो जाति व्यवस्था को हमारे समाज

के लिये बुराई मानते हैं, जाति-धर्म से उत्पन्न ऊँच-नीच की भावना को खत्म करना चाहते हैं। साथ ही महिलाओं को पुरुष के बराबर अधिकार दिलाने में विश्वास रखते हैं।

समीक्षक: अनुराधा